पाठ–2

हुसैन की कहानी अपनी जबानी

(लेखक –मकबूल फिदा हुसैन)

विधा – आत्मकथा

प्रेरणा – यदि विद्यार्थी जीवन में प्रतिभा विकास का सही अवसर और दिशा मिल जाए जो विद्यार्थी का जीवन धन्य हो जाता है। अतः अभिभावक और शिक्षक दोनों को अपने बच्चों की शैक्षणिक योग्याताओं से इतर प्रतिभा को पहचान कर उसके विकास में सहयोग देकर उसके उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त करना चाहिए।

मुख्य स्मरणीय बिन्दु –

– 'हुसैन की कहानी अपनी जबानी' का पहला अंश 'बड़ौदा का बोर्डिंग स्कूल' उनके विद्यार्थी जीवन से जुड़ा है जहाँ उनकी रचनात्मक प्रतिभा के अंकुर फूटे। उनकी प्रतिभा सबके सामने आई ।

– दूसरा अंश 'रानीपुर बाजार' है जहाँ हुसैन से अपने पारिवारिक व्यवसाय को स्वीकार करने की अपेक्षा की जा रही थी। किन्तु वहाँ भी हुसैन के अन्दर का कलाकार उनसे चित्रकारी कराता रहा। अंततः हुसैन के पिताजी ने अपने बेटे के हुनर को पहचाना और उनकी रोशन ख्याली ने हुसैन को एक महान चित्रकार बना दिया।

– दादाजी की मृत्यु के बाद हुसैन दादा के कमरे में ही बंद रहता और उनके बिस्तर में ही सोता। हुसैन के इस तरह गुमसुम रहने के कारण उसके अब्बा ने उसे बड़ौदा के बोर्डिंग स्कूल भेज दिया। बोर्डिंग में मकबूल के छः दोस्त बने–मोहम्मद इब्राहीम गोहर अली, अरशद, हामिद कंबर हुसैन, अब्बास जी अहमद, अब्बास अली फिदा, अत्तार आदि। सभी में दो साल तक दोस्ती रही। फिर सभी भिन्न–भिन्न दिशाओं में चले गए। दो साल की नज़दीकी तमाम उम्र कभी दिल की दूरी में बदल नहीं पाई। विद्यालय में मकबूल ने ड्राइंग मास्टर द्वारा ब्लैकबोर्ड पर बनाई चिड़िया को अपनी स्लेट पर हुबहू बनाकर तथा दो अक्टूबर को गाँधी जयन्ती के अवसर पर गाँधी जी का पोट्रेट ब्लैकबोर्ड पर बनाकर अपनी जन्मजात कला का परिचय दिया।

– रानीपुर बाजार में चाचा मुरादअली की दुकान पर बैठकर उनका सारा ध्यान ड्राइंग और पेटिंग पर रहता था। वह दुकान पर बैठे–बैठे आने जाने वालों के चित्र बनाता रहता जिनमें से घूँघटताने मेहतरानी, गेहूँ की बोरी उठाए मजदूर की पेंचावली पगड़ी का स्केच, बुकरा पहले औरत और बकरी के बच्चे का स्केच

आदि प्रमुख थे। एक बार 'सिंहगढ़' फिल्म का पोस्टर देखकर मकबूल को ऑयल पेंटिंग बनाने का विचार आया। उसने अपनी किताबें बेचकर ऑयल कलर खरीदा तथा अपनी पहली पेंटिंग बनाई। पेंटिंग देखकर पिता ने पुत्र को गले लगा लिया।

– एक बार इंदौर के सर्राफा बाज़ार में लैंडस्केप बनाते समय बेन्द्रे साहब से मुलाकात हुई। फिर दोनों लैंडस्केप पेंट करने लगे। मकबूल ने एक दिन बेन्द्रे को अपने पिता से मिलवाया। बेन्द्रे ने मकबूल के काम पर उनसे बात की। मकबूल के पिता ने बंबई से 'विनसर न्यूटन' ऑयल ट्यूब और कैनवस मँगवाए। उन्होंने बेटे के लिए सारी पुरानी मान्यताओं को नज़रअंदाज कर, अपने बेटे को जिन्दगी में रंग भरने की इजाज़त दे दी। ये हुसैन के जीवन की ऐसी महत्वपूर्ण घटनाएँ थी, जिनकी हुसैन को एक प्रसिद्ध चित्रकार बनाने में विशेष भूमिका रही।

क) प्रश्न–विचार बोधात्मक प्रश्न

1. लेखक ने अपने पाँच मित्रों के जो शब्द चित्र प्रस्तुत किए हैं, उनसे उनके अलग–अलग व्यक्तित्व की झलक मिलती है, फिर भी वे घनिष्ठ मित्र हैं, कैसे?
2. आप कैसे कह सकते हैं कि लेखक का अपने दादा से विशेष लगाव रहा?
3. 'लेखक जन्मजात कलाकार है'–इस आत्मकथा में सबसे पहले कहाँ उद्घाटित होता है।
4. दुकान पर बैठे–बैठे भी मकबूल के भीतर का कलाकार उसके किन कार्यकलापों से अभिव्यक्त होता है।
5. प्रचार–प्रसार के पुराने तरीकों और वर्तमान तरीकों में क्या फर्क आया है? पाठ के आधार पर बताओ।
6. कला के प्रति लोगों का नजरिया पहले कैसा था? उसमें अब क्या बदलाव आया है?
7. इस पाठ में मकबूल के पिता के व्यक्तित्व की कौन–2 सी बातें उभरकर आई हैं?
8. बेद्रें साहब कौन थे? उन्होंने पेंटिंग के क्षेत्र में क्या किया।

विचारणीय प्रश्नः–

1. हुसैन के मन में किस फिल्म के पोस्टर को देखकर ऑयल पेंटिंग बनाने का विचार आया?

2. बड़ौदा शहर व वहाँ के मदरसे पर टिप्पणी कीजिए।
3. 1933 में बेन्द्रे द्वारा कैनवस पर बनाई गई पेंटिंग का नाम क्या था? इस पेंटिंग को किसने सम्मानित किया?
4. विद्यालयों में महापुरूषों की जयंतियाँ क्यों मनाई जाती है।
5. फ़िल्मी इश्तिहार को देखकर मकबूल ने क्या किया?
6. मकबूल और बेन्द्रे का आपसी परिचय किस प्रकार और कहाँ हुआ?